الزُّوْرَ ۙ وَ اِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿۷۲﴾ وَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ

देते[130] और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इ़ज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं[131] और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई

رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّ عُمْيَانًا ﴿۷۳﴾ وَ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا

जाएं तो उन पर[132] बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते[133] और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब

هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ

हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक[134] और हमें परहेज़ गारों का

اِمَامًا ﴿۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَ يُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً

पेश्वा बना[135] उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का और वहां मुजरे (दुआ़ व आदाब) और सलाम के साथ उन की पेश्वाई

وَّ سَلٰمًا ۙ﴿۷۵﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ﴿۷۶﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

होगी[136] हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह तुम फ़रमाओ[137] तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं

رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿۷۷﴾ ع

मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुम ने तो झुटलाया[138] तो अब होगा वोह अ़ज़ाब कि लिपट रहेगा[139]

ربع

اٰيَاتُهَا ٢٢٧ | ٢٦ سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ ٤٧ | رُكُوْعَاتُهَا ١١

सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है, इस में दो सो सत्ताईस आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला की बन्दा नवाज़ी और उस की शाने करम पर ख़ुशी हुई और चेहरए अक़्दस पर सुरूर से तबस्सुम के आसार नुमायां हुए । **130 :** और झूटों की मजलिस से अ़लाहि़दा रहते हैं और उन के साथ मुख़ालतत नहीं करते **131 :** और अपने आप को लह्‌व व बातिल से मुलव्वस नहीं होने देते, ऐसी मजालिस से ए'राज़ करते हैं । **132 :** ब त़रीक़े तग़ाफ़ुल (ग़फ़्लत करते हुए) **133 :** कि न सोचें न समझें बल्कि बगोशे होश सुनते हैं और ब चश्मे बसीरत देखते हैं और उस नसीहत से पन्द पज़ीर होते (नसीहत क़बूल करते) हैं, नफ़्अ़ उठाते हैं और उन आयतों पर फ़रमां बरदाराना गिरते हैं । **134 :** या'नी फ़रहत व सुरूर । मुराद येह है कि हमें बीबियां और औलाद, नेक सालेह मुत्तक़ी अ़त़ा फ़रमा कि उन के हुस्ने अ़मल और उन की इत़ाअ़ते ख़ुदा व रसूल देख कर हमारी आंखें ठन्डी और दिल ख़ुश हों । **135 :** या'नी हमें ऐसा परहेज़ गार और ऐसा आ़बिद व ख़ुदा परस्त बना कि हम परहेज़ गारों की पेश्वाई के क़ाबिल हों और वोह दीनी उमूर में हमारी इक़्तिदा करें । **मस्अला :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में दलील है कि आदमी को दीनी पेश्वाई और सरदारी की रग़बत व त़लब चाहिये । इन आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने सालिहीन बन्दों के औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए, इस के बा'द उन की जज़ा ज़िक्र फ़रमाई जाती है । **136 :** मलाएका तहिय्यत व तस्लीम के साथ उन की तक्रीम करेंगे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ सलाम भेजेगा । **137 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अहले मक्का से कि **138 :** मेरे रसूल और मेरी किताब को **139 :** या'नी अ़ज़ाबे दाइम व हलाके लाज़िम । **1 :** सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है सिवाए आख़िर की चार आयतों के जो "وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُم" से शुरूअ़ होती हैं । इस सूरत में ग्यारह 11 रुकूअ़ और दो सो सत्ताईस 227 आयतें और एक हज़ार दो सो उनासी 1279 कलिमे और पांच हज़ार पांच सो चालीस 5540 ह़र्फ़ हैं ।

www.dawateislami.net

طٰسٓمٓ ① تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ② لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا

येह आयतें हैं रोशन किताब की[2] कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के ग़म में कि वोह ईमान नहीं

مُؤْمِنِيْنَ ③ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا

लाए[3] अगर हम चाहें तो आस्मान से उन पर कोई निशानी उतारें कि उन के ऊंचे ऊंचे उस के हुज़ूर झुके रह

خٰضِعِيْنَ ④ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا

जाएं[4] और नहीं आती उन के पास रह़मान की त़रफ़ से कोई नई नसीह़त मगर उस से मुंह

عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ⑤ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

फेर लेते हैं[5] तो बेशक उन्हों ने झुटलाया तो अब उन पर आया चाहती हैं ख़बरें उन के

يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑥ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ

ठट्ठे (मज़ाक़) की[6] क्या उन्हों ने ज़मीन को न देखा हम ने उस में कितने इ़ज़्ज़त वाले जोड़े

كَرِيْمٍ ⑦ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑧ وَاِنَّ

उगाए[7] बेशक इस में ज़रूर निशानी है[8] और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं और बेशक

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ⑨ ع وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ ع ٥

तुम्हारा रब ज़रूर वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है[9] और याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को निदा फ़रमाई कि ज़ालिम लोगों के

الظّٰلِمِيْنَ ⑩ لا قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ⑪ قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَخَافُ

पास जा जो फ़िरऔ़न की क़ौम है[10] क्या वोह न डरेंगे[11] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं डरता हूं कि

---

2 : या'नी क़ुरआने पाक की, जिस का ए'जाज़ ज़ाहिर है और जो ह़क़ को बात़िल से मुमताज़ करने वाला है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बराहे रह़मत व करम ख़ित़ाब होता है। 3 : जब अहले मक्का ईमान न लाए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की तो हुज़ूर पर उन की मह़रूमी बहुत शाक़ हुई, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई कि आप इस क़दर ग़म न करें। 4 : और कोई मा'सियत व ना फ़रमानी के साथ गरदन न उठा सके। 5 : या'नी दम बदम उन का कुफ़्र बढ़ता जाता है कि जो मौ़इ़ज़त व तज़्कीर (वा'ज़ो नसीह़त) और जो वह़्य नाज़िल होती है वोह उस का इन्कार करते चले जाते हैं। 6 : येह वईद है और इस में इन्ज़ार है कि रोज़े बद्र या रोज़े क़ियामत जब उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा तब उन्हें ख़बर होगी कि क़ुरआन और रसूल की तक्ज़ीब का येह अन्जाम है। 7 : या'नी क़िस्म क़िस्म के बेहतरीन और नाफ़ेअ़ नबातात पैदा किये और शअ़बी ने कहा कि आदमी ज़मीन की पैदावार हैं। जो जन्नती है वोह इ़ज़्ज़त वाला और करीम और जो जहन्नमी है वोह बद बख़्त लईम है। 8 : **अल्लाह** तआ़ला के कमाले क़ुदरत पर 9 : काफ़िरों से इन्तिक़ाम लेता और मोमिनीन पर रह़मत फ़रमाता है। 10 : जिन्हों ने कुफ़्र व मआ़सी से अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और बनी इसराईल को ग़ुलाम बना कर और उन्हें त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं पहुंचा कर उन पर ज़ुल्म किया, उस क़ौम का नाम क़िब्त़ है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को उन की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा गया कि उन्हें उन की बद किरदारी पर ज़ज्र फ़रमाएं। 11 : **अल्लाह** से, और अपनी जानों को **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान ला कर और उस की फ़रमां बरदारी कर के उस के अ़ज़ाब से न बचाएंगे। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में।

www.dawateislami.net

اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿١٢﴾ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى

वोह मुझे झुटलाएंगे और मेरा सीना तंगी करता है[12] और मेरी ज़बान नहीं चलती[13] तो तू हारून को भी

هٰرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿١٤﴾ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا

रसूल कर[14] और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम है[15] तो मैं डरता हूं कहीं मुझे[16] क़त्ल कर दें फ़रमाया यूं नहीं[17] तुम दोनों मेरी आयतें

بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ

ले कर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते हैं[18] तो फ़िरऔ़न के पास जाओ फिर उस से कहो हम दोनों उस के रसूल हैं

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ

जो रब है सारे जहां का कि तू हमारे साथ बनी इसराईल को छोड़ दे[19] बोला क्या हम ने तुम्हें

فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿١٨﴾ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ

अपने यहां बचपन में न पाला और तुम ने हमारे यहां अपनी उ़म्र के कई बरस गुज़ारे[20] और तुम ने किया अपना वोह काम

الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ

जो तुम ने किया[21] और तुम नाशुक्र थे[22] मूसा ने फ़रमाया मैं ने वोह काम किया जब कि मुझे राह की

الضَّآلِّيْنَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ

ख़बर न थी[23] तो मैं तुम्हारे यहां से निकल गया जब कि तुम से डरा[24] तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता फ़रमाया[25] और

12 : उन के झुटलाने से **13 :** या'नी गुफ़्तगू करने में किसी क़दर तकल्लुफ़ होता है उस उ़क़्दह (गिरह) की वज्ह से जो ज़बान में ब अय्यामे सिग़्रसिनी मुंह में आग का अंगारा रख लेने से हो गया है। **14 :** ताकि वोह तब्लीग़े रिसालत में मेरी मदद करें। जिस वक़्त ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को (मुल्के) शाम में नुबुव्वत अ़ता की गई उस वक़्त ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र में थे। **15 :** कि मैं ने क़िब्ती को मारा था। **16 :** उस के बदले में **17 :** तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते और **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को भी नबी कर दिया और दोनों को हुक्म दिया **18 :** जो तुम कहो और जो तुम्हें जवाब दिया जाए। **19 :** ताकि हम उन्हें सर ज़मीने शाम में ले जाएं। फ़िरऔ़न ने चार सो बरस तक बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाए रखा था और उस वक़्त बनी इसराईल की ता'दाद छ[6] लाख तीस हज़ार 630000 थी। **अल्लाह** तआ़ला का येह हुक्म पा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए, आप पश्मीना (ऊन) का जुब्बा पहने हुए थे, दस्ते मुबारक में अ़सा था, अ़सा के सिरे में ज़म्बील लटकी थी जिस में सफ़र का तोशा था, इस शान से आप मिस्र में पहुंच कर अपने मकान में दाख़िल हुए। ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام वहीं थे आप ने उन्हें ख़बर दी कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे रसूल बना कर फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजा है और आप को भी रसूल बनाया है कि फ़िरऔ़न को ख़ुदा की त़रफ़ दा'वत दो। येह सुन कर आप की वालिदा साह़िबा घबराईं और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगीं कि फ़िरऔ़न तुम्हें क़त्ल करने के लिये तुम्हारी तलाश में है, जब तुम उस के पास जाओगे तो तुम्हें क़त्ल करेगा। लेकिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उन के येह फ़रमाने से न रुके और ह़ज़रते हारून को साथ ले कर शब के वक़्त फ़िरऔ़न के दरवाज़े पर पहुंचे, दरवाज़ा खट खटाया, पूछा : आप कौन हैं ? ह़ज़रत ने फ़रमाया : मैं हूं मूसा, रब्बुल आ़लमीन का रसूल। फ़िरऔ़न को ख़बर दी गई और सुब्ह़ के वक़्त आप बुलाए गए आप ने पहुंच कर **अल्लाह** तआ़ला की रिसालत अदा की और फ़िरऔ़न के पास जो हुक्म पहुंचाने पर आप मामूर किये गए थे वोह पहुंचाया, फ़िरऔ़न ने आप को पहचाना। **20 :** मुफ़स्सिरीन ने कहा : तीस बरस, उस ज़माने में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरऔ़न के लिबास पहनते थे और उस की सुवारियों में सुवार होते थे और उस के फ़रज़न्द मश्हूर थे। **21 :** क़िब्ती को क़त्ल किया **22 :** कि तुम ने हमारी ने'मत की सिपास गुज़ारी न की और हमारे एक आदमी को क़त्ल कर दिया। **23 :** मैं न जानता था कि

www.dawateislami.net

جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ

मुझे पैग़म्बरों से किया और येह कोई ने'मत है जिस का तू मुझ पर एहसान जताता है कि तू ने ग़ुलाम बना कर रखे बनी

اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

इसराईल[26] फ़िरऔ़न बोला और सारे जहान का रब क्या है[27] मूसा ने फ़रमाया रब आस्मानों

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا

और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो[28] अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम

تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ

ग़ौर से सुनते नहीं[29] मूसा ने फ़रमाया रब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का[30] बोला

رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ

तुम्हारे येह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अ़क़्ल नहीं रखते[31] मूसा ने फ़रमाया रब पूरब (मशरिक़) और

الْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا

पश्चिम (मग़रिब) का और जो कुछ इन के दरमियान है[32] अगर तुम्हें अ़क़्ल हो[33] बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा

घूंसा मारने से वोह शख़्स मर जाएगा, मेरा मारना तादीब के लिये था, न क़त्ल के लिये **24 :** कि तुम मुझे क़त्ल करोगे और शहर मद्यन को चला गया। **25 :** मद्यन से वापसी के वक़्त। "हुक्म" से यहां या नुबुव्वत मुराद है या इल्म। **26 :** या'नी इस में तेरा क्या एहसान है कि तुम ने मेरी तरबियत की और बचपन में मुझे रखा, खिलाया, पहनाया क्यूं कि मेरे तुझ तक पहुंचने का सबब तो येही हुवा कि तू ने बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाया उन की औलादों को क़त्ल किया, येह तेरा ज़ुल्मे अ़ज़ीम इस का बाइ़स हुवा कि मेरे वालिदैन मुझे परवरिश न कर सके और मेरे दरिया में डालने पर मजबूर हुए, तू ऐसा न करता तो मैं अपने वालिदैन के पास रहता, इस लिये येह बात क्या इस क़ाबिल है कि इस का एहसान जताया जाए ? फ़िरऔ़न, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की इस तक़रीर से ला जवाब हुवा और उस ने उस्लूबे कलाम बदला और येह गुफ़्तगू छोड़ कर दूसरी बात शुरूअ़ की। **27 :** जिस के तुम अपने आप को रसूल बताते हो। **28 :** या'नी अगर तुम अश्या को दलील से जानने की सलाहिय्यत रखते हो तो इन चीज़ों की पैदाइश उस के वुजूद की काफ़ी दलील है। ईक़ान उस इल्म को कहते हैं जो इस्तिद्लाल से हासिल हो इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला की शान में मूक़िन नहीं कहा जाता। **29 :** उस वक़्त उस के गिर्द उस की क़ौम के अशराफ़ में से पांच सो शख़्स ज़ेवरों से आरास्ता ज़र्रीं कुर्सियों पर बैठे थे, उन से फ़िरऔ़न का येह कहना क्या तुम ग़ौर से नहीं सुनते ब ई मा'ना था कि वोह आस्मान और ज़मीन को क़दीम समझते थे और इन के हुदूस के मुन्किर थे, मत़लब येह था कि जब येह चीज़ें क़दीम हैं तो इन के लिये रब की क्या ह़ाजत ? अब ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन चीज़ों से इस्तिद्लाल पेश करना चाहा जिन का हुदूस और जिन की फ़ना मुशाहदे में आ चुकी है। **30 :** या'नी अगर तुम दूसरी चीज़ों से इस्तिद्लाल नहीं कर सकते तो ख़ुद तुम्हारे नुफ़ूस से इस्तिद्लाल पेश किया जाता है, अपने आप को जानते हो, पैदा हुए हो, अपने बाप दादा को जानते हो कि वोह फ़ना हो गए तो अपनी पैदाइश से और उन की फ़ना से पैदा करने और फ़ना कर देने वाले के वुजूद का सुबूत मिलता है। **31 :** फ़िरऔ़न ने येह इस लिये कहा कि वोह अपने सिवा किसी मा'बूद के वुजूद का क़ाइल न था और जो इस के मा'बूद होने का ए'तिक़ाद न रखे उस को ख़ारिज अज़ अ़क़्ल कहता था और ह़क़ीक़तन इस त़रह़ की गुफ़्तगू इज़्ज़ के वक़्त आदमी की ज़बान पर आती है, लेकिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़ज़्ले हिदायत व इर्शाद को अ़ला वज्हिल कमाल अदा किया और उस की तमाम ला या'नी (फ़ुज़ूल) गुफ़्तगू के बा वुजूद फिर मज़ीद बयान की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए। **32 :** क्यूं कि पूरब से आफ़्ताब का तुलूअ़ करना और पश्चिम में ग़ुरूब हो जाना और साल की फ़स्लों में एक हिसाबे मुअ़य्यन पर चलना और हवाओं और बारिशों वग़ैरा के निज़ाम येह सब उस के वुजूद व क़ुदरत पर दलालत करते हैं। **33 :** अब फ़िरऔ़न मुतह़य्यिर हो गया और आसारे क़ुदरते इलाही के इन्कार की राह बाक़ी न रही और कोई जवाब उस से बन न आया।

www.dawateislami.net

غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ

ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद कर दूंगा[34] फ़रमाया क्या अगरचे मैं तेरे पास कोई रोशन चीज़

مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا

लाऊं[35] कहा तो लाओ अगर सच्चे हो तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया जभी

هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ ع ٢ ٢٤ ٦

वोह सरीह़ अज़्दहा हो गया[36] और अपना हाथ निकाला[37] तो जभी वोह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा[38] बोला

لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ

अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक येह दाना जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने

بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ

जादू के ज़ोर से तब तुम्हारा क्या मश्वरा है[39] वोह बोले उन्हें और उन के भाई को ठहराए रहो और शहरों में

حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ

जम्अ़ करने वाले भेजो कि वोह तेरे पास ले आएं हर बड़े जादूगर दाना को[40] तो जम्अ़ किये गए जादूगर एक मुक़र्रर

يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾ وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ

दिन के वा'दे पर[41] और लोगों से कहा गया क्या तुम जम्अ़ हो गए[42] शायद हम इन

السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ

जादूगरों ही की पैरवी करें अगर येह ग़ालिब आएं[43] फिर जब जादूगर आए फ़िरऔ़न से बोले

34 : फ़िरऔ़न की क़ैद क़त्ल से बदतर थी, उस का जेलख़ाना तंगो तारीक अ़मीक़ गढ़ा था, उस में अकेला डाल देता था, न वहां कोई आवाज़ सुनाई आती थी न कुछ नज़र आता था। **35 :** जो मेरी रिसालत की बुरहान हो। मुराद इस से मो'जिज़ा है इस पर फ़िरऔ़न ने **36 :** अ़सा अज़्दहा बन कर आस्मान की त़रफ़ ब क़दर एक मील के उड़ा, फिर उतर कर फ़िरऔ़न की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : ऐ मूसा मुझे जो चाहिये हुक्म दीजिये। फ़िरऔ़न ने घबरा कर कहा : उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ो। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया। फ़िरऔ़न कहने लगा : इस के सिवा और भी कोई मो'जिज़ा है ? आप ने फ़रमाया : हां और उस को यदे बैज़ा दिखाया। **37 :** गिरेबान में डाल कर **38 :** उस से आफ़्ताब की सी शुआ़ए ज़ाहिर हुई। **39 :** क्यूं कि उस ज़माने में जादू का बहुत रवाज था, इस लिये फ़िरऔ़न ने ख़याल किया कि येह बात चल जाएगी और उस की क़ौम के लोग इस धोके में आ कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुतनफ़्फ़िर हो जाएंगे और उन की बात क़बूल न करेंगे। **40 :** जो इल्मे सेह्र में बक़ौल उन के ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से बढ़ कर हो और वोह लोग अपने जादू से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात का मुक़ाबला करें ताकि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये ह़ुज्जत बाक़ी न रहे और फ़िरऔ़नियों को येह कहने का मौक़अ़ मिल जाए कि येह काम जादू से हो जाते हैं लिहाज़ा नुबुव्वत की दलील नहीं। **41 :** वोह दिन फ़िरऔ़नियों की ईद का था और उस मुक़ाबले के लिये वक़्ते चाश्त मुक़र्रर किया गया था। **42 :** ताकि देखो कि दोनों फ़रीक़ क्या करते हैं और उन में कौन ग़ालिब आता है। **43 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर, इस से मक़्सूद उन का जादूगरों का इत्तिबाअ़ करना न था, बल्कि ग़रज़ येह थी कि इस ह़ीले से लोगों को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इत्तिबाअ़ से रोकें।

www.dawateislami.net

اَىِٕنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۱﴾ قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ

क्या हमें कुछ मज़दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आए बोला हां और उस वक़्त तुम मेरे मुक़र्रब

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَاَلْقَوْا

हो जाओगे[44] मूसा ने उन से फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है[45] तो उन्हों ने

حِبَالَهُمْ وَ عِصِيَّهُمْ وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَاَلْقٰى

अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और बोले फ़िरऔन की इ़ज़्ज़त की क़सम बेशक हमारी ही जीत है[46] तो

مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۴۵﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ

मूसा ने अपना अ़सा डाला जभी वोह उन की बनावटों को निगलने लगा[47] अब सज्दे में

سٰجِدِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۴۸﴾

गिरे जादूगर बोले हम ईमान लाए उस पर जो सारे जहान का रब है जो मूसा और हारून का रब है

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू

السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ

सिखाया[48] तो अब जाना चाहते हो[49] मुझे क़सम है बेशक मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा

وَّ لَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۹﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ ﴿۵۰﴾

और तुम सब को सूली दूंगा[50] वोह बोले कुछ नुक़्सान नहीं[51] हम अपने रब की त़रफ़ पलटने वाले हैं[52]

44 : तुम्हें दरबारी बनाया जाएगा, तुम्हें ख़ास ए'ज़ाज़ दिये जाएंगे। सब से पहले दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी, सब से बा'द तक दरबार में रहोगे, इस के बा'द जादूगरों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि क्या ह़ज़रत पहले अपना अ़सा डालेंगे या हमें इजाज़त है कि हम अपना सामाने सेह़्र डालें। **45 :** ताकि तुम उस का अन्जाम देख लो। **46 :** उन्हें अपने ग़लबे का इत्मीनान था क्यूं कि सेह़्र के आ'माल में जो इन्तिहा के अ़मल थे येह उन को काम में लाए थे और यक़ीने कामिल रखते थे कि अब कोई सेह़्र इस का मुक़ाबला नहीं कर सकता। **47 :** जो उन्हों ने जादू के ज़रीए़ से बनाई थीं या'नी उन की रस्सियां और लाठियां जो जादू से अज़्दहे बन कर दौड़ते नज़र आ रहे थे। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा अज़्दहा बन कर उन सब को निगल गया फिर उस को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने दस्ते मुबारक में लिया तो वोह मिस्ले साबिक़ अ़सा था। जब जादूगरों ने येह देखा तो उन्हें यक़ीन हो गया कि येह जादू नहीं है। **48 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारे उस्ताद हैं इसी लिये वोह तुम से बढ़ गए। **49 :** कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए। **50 :** इस से मक़्सूद येह था कि आ़म ख़ल्क़ डर जाए और जादूगरों को देख कर लोग ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न ले आएं। **51 :** ख़्वाह दुन्या में कुछ भी पेश आए क्यूं कि **52 :** ईमान के साथ और हमें अल्लाह तआ़ला से रह़मत की उम्मीद है।

www.dawateislami.net

ع ٣ ١٨ ٧

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَ

हमें तम्अ़ है कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्श दे इस पर कि हम सब से पहले ईमान लाए[53] और

اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ فَاَرْسَلَ

हम ने मूसा को वह्य भेजी कि रातों रात मेरे बन्दों को[54] ले निकल बेशक तुम्हारा पीछा होना है[55] अब फ़िरऔ़न ने

فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَ

शहरों में जम्अ़ करने वाले भेजे[56] कि येह लोग एक थोड़ी जमाअ़त हैं और

اِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَ اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ

बेशक वोह हम सब का दिल जलाते हैं[57] और बेशक हम सब चोकन्ने हैं[58] तो हम ने उन्हें[59] बाहर निकाला

جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا

बाग़ों और चश्मों और ख़ज़ानों और उ़म्दा मकानों से हम ने ऐसा ही किया और उन का वारिस कर दिया

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ

बनी इसराईल को[60] तो फ़िरऔ़नियों ने उन का तआ़क़ुब किया दिन निकले फिर जब आमना सामना हुवा दोनों गुरौहों का[61] मूसा

اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾

वालों ने कहा हम को उन्हों ने आ लिया[62] मूसा ने फ़रमाया यूं नहीं[63] बेशक मेरा रब मेरे साथ है वोह मुझे अब राह देता है

فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ

तो हम ने मूसा को वह्य फ़रमाई कि दरिया पर अपना अ़सा मार[64] तो जभी दरिया फट गया[65] तो हर हिस्सा हो गया

كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ

जैसे बड़ा पहाड़[66] और वहां क़रीब लाए हम दूसरों को[67] और हम ने बचा लिया मूसा और उस

53 : रइ़य्यते फ़िरऔ़न में से या इस मज्मअ़ के हाज़िरीन में से। इस वाक़िए़ के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कई साल वहां इक़ामत फ़रमाई और उन लोगों को हक़ की दा'वत देते रहे लेकिन उन की सरकशी बढ़ती गई। **54 :** या'नी बनी इसराईल को मिस्र से **55 :** फ़िरऔ़न और उस के लश्कर पीछा करेंगे और तुम्हारे पीछे पीछे दरिया में दाख़िल होंगे, हम तुम्हें नजात देंगे और उन्हें ग़र्क़ करेंगे। **56 :** लश्करों को जम्अ़ करने के लिये। जब लश्कर जम्अ़ हो गए तो उन की कसरत के मुक़ाबिल बनी इसराईल की ता'दाद थोड़ी मा'लूम होने लगी। चुनान्चे फ़िरऔ़न ने बनी इसराईल की निस्बत कहा : **57 :** हमारी मुख़ालफ़त कर के और बे हमारी इजाज़त के हमारी सर ज़मीन से निकल कर **58 :** मुस्तइ़द हैं हथियार बन्द हैं। **59 :** या'नी फ़िरऔ़नियों को **60 :** फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के ग़र्क़ के बा'द। **61 :** और उन में से हर एक ने दूसरे को देखा। **62 :** अब वोह हम पर क़ाबू पा लेंगे न हम उन के मुक़ाबले की ताक़त रखते हैं न भागने की जगह है क्यूं कि आगे दरिया है। **63 :** वा'दए इलाही पर कामिल भरोसा है। **64 :** चुनान्चे हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दरिया पर अ़सा मारा **65 :** और उस के बारह हिस्से नुमूदार हुए **66 :** और उन के दरमियान ख़ुश्क राहें। **67 :** या'नी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों को ता आं कि वोह बनी इसराईल के रास्तों में

www.dawateislami.net

مَّعَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا

के सब साथ वालों को[68] फिर दूसरों को डुबो दिया[69] बेशक इस में ज़रूर निशानी है[70] और उन

كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ ع ٧

में अक्सर मुसल्मान न थे[71] और बेशक तुम्हारा रब वोही इ़ज़्ज़त वाला[72] मेहरबान है[73]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ وقف لازم

और उन पर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की[74] जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो[75]

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ

बोले हम बुतों को पूजते हैं फिर उन के सामने आसन मारे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहते हैं फ़रमाया क्या वोह तुम्हारी सुनते हैं जब

تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا

तुम पुकारो या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं[76] बोले बल्कि हम ने अपने बाप दादा को

كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَ

ऐसा ही करते पाया फ़रमाया तो क्या देखते हो जिन्हें पूज रहे हो तुम और

اٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْۤ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾ الَّذِيْ

तुम्हारे अगले बाप दादा[77] बेशक वोह सब मेरे दुश्मन हैं[78] मगर परवर्दगारे आ़लम[79] वोह जिस

خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا

ने मुझे पैदा किया[80] तो वोह मुझे राह देगा[81] और वोह जो मुझे खिलाता और पिलाता है[82] और जब

चल पड़े जो उन के लिये दरिया में ब क़ुदरते इलाही पैदा हुए थे। **68 :** दरिया से सलामत निकाल कर **69 :** या'नी फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को, इस त़रह़ कि जब बनी इसराईल कुल के कुल दरिया से बाहर हो गए और तमाम फ़िरऔ़नी दरिया के अन्दर आ गए तो दरिया ब हुक्मे इलाही मिल गया और मिस्ले साबिक़ हो गया और फ़िरऔ़न मअ़ अपनी क़ौम के डूब गया। **70 :** अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत पर और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है। **71 :** या'नी अहले मिस्र में सिर्फ़ आसिया फ़िरऔ़न की बीबी और ह़िज़्क़ील जिन को मोमिन आले फ़िरऔ़न कहते हैं वोह अपना ईमान छुपाए रहते थे और फ़िरऔ़न के चचाज़ाद थे और मरयम जिस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ब्र का निशान बताया था जब कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन के ताबूत को दरिया से निकाला। **72 :** कि उस ने काफ़िरों को ग़र्क़ कर के उन से इन्तिक़ाम लिया। **73 :** मोमिनीन पर जिन्हें ग़र्क़ से नजात दी **74 :** या'नी मुश्रिकीन पर **75 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जानते थे कि वोह लोग बुत परस्त हैं बा वुजूद इस के आप का सुवाल फ़रमाना इस लिये था ताकि उन्हें दिखा दें कि जिन चीज़ों को वोह लोग पूजते हैं वोह किसी त़रह़ इस के मुस्तह़िक़ नहीं। **76 :** जब येह कुछ नहीं तो इन्हें तुम ने मा'बूद किस त़रह़ क़रार दिया **77 :** कि न येह इ़ल्म रखते हैं न क़ुदरत न कुछ सुनते हैं न कोई नफ़्अ़ या ज़रर पहुंचा सकते हैं। **78 :** मैं उन का पूजा जाना गवारा नहीं कर सकता। **79 :** मेरा रब है, मेरा कारसाज़ है, मैं उस की इ़बादत करता हूं, वोह मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है, उस के औसाफ़ येह हैं **80 :** नेस्त से हस्त (अ़दम से वुजूद अ़त़ा) फ़रमाया और अपनी त़ाअ़त के लिये बनाया **81 :** आदाबे ख़ुल्लत की जैसी कि साबिक़ में हिदायत फ़रमा चुका है मसालेह़े दुन्या व दीन की **82 :** और मेरा रोज़ी देने वाला है।

www.dawateislami.net

مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْ

मैं बीमार होउं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है[83] और वोह मुझे वफ़ात देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा[84] और वोह जिस

اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّ

की मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा[85] ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अ़ता कर[86] और

اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾

मुझे उन से मिला दे जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं[87] और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में[88]

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ

और मुझे उन में कर जो चैन के बाग़ों के वारिस हैं[89] और मेरे बाप को बख़्श दे[90] बेशक वोह

الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا

गुमराह है और मुझे रुस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे[91] जिस दिन न माल काम आएगा न

بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

बेटे मगर वोह जो अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर[92] और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के लिये[93]

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾ مِنْ

और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़ गुमराहों के लिये और उन से कहा जाएगा[94] कहां हैं वोह जिन को तुम पूजते थे अल्लाह

دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾

के सिवा क्या वोह तुम्हारी मदद करेंगे[95] या बदला लेंगे तो औंधा दिये गए जहन्नम में वोह और सब गुमराह[96]

83 : मेरे अमराज़ दूर करता है। इब्ने अ़ता ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब मैं ख़ल्क़ की दीद से बीमार होता हूं तो मुशाहदए हक़ से मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है। **84 :** मौत और ह़यात उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। **85 :** अम्बिया मा'सूम हैं गुनाह उन से सादिर नहीं होते, उन का इस्तिग़फ़ार अपने रब के हुज़ूर तवाज़ोअ़ है और उम्मत के लिये त़लबे मग़्फ़िरत की ता'लीम है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इन सिफ़ाते इलाहिय्यह को बयान करना अपनी क़ौम पर इक़ामते हुज्जत है कि मा'बूद वोही हो सकता है जिस की येह सिफ़ात हों। **86 :** "हुक्म" से या इ़ल्म मुराद है या हिक्मत या नुबुव्वत। **87 :** या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام, और आप की येह दुआ मुस्तजाब हुई। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : "وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ" **88 :** या'नी उन उम्मतों में जो मेरे बा'द आईं। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने उन को येह अ़ता फ़रमाया कि तमाम अहले अद्यान उन से महब्बत रखते हैं और उन की सना करते हैं। **89 :** जिन्हें तू जन्नत अ़ता फ़रमाएगा **90 :** तौबा व ईमान अ़ता फ़रमा कर। और येह दुआ आप ने इस लिये फ़रमाई कि वक़्ते मुफ़ारक़त आप के वालिद ने आप से ईमान लाने का वा'दा किया था, जब ज़ाहिर हो गया कि वोह ख़ुदा का दुश्मन है उस का वा'दा झूटा था तो आप उस से बेज़ार हो गए जैसा कि सूरए बराअत में है : "وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ" । **91 :** या'नी रोज़े क़ियामत **92 :** जो शिर्क, कुफ़्र व निफ़ाक़ से पाक हो, उस को उस का माल भी नफ़्अ़ देगा जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह़ हो। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है उस के अ़मल मुन्क़त़अ़ हो जाते हैं सिवा तीन के, **एक** सदक़ए जारिया। **दूसरा** वोह माल जिस से लोग नफ़्अ़ उठाएं। **तीसरी** नेक औलाद जो उस के लिये दुआ करे। **93 :** कि उस को देखेंगे **94 :** ब त़रीक़ ज़ज्रो तौबीख़ के उन के शिर्क व कुफ़्र पर **95 :** अज़ाबे

www.dawateislami.net

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾ تَاللّٰهِ

और इब्लीस के लश्कर सारे[97] कहेंगे और वोह उस में बाहम झगड़ते होंगे ख़ुदा की क़सम

اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ

बेशक हम खुली गुमराही में थे जब कि तुम्हें रब्बुल आ़लमीन के बराबर ठहराते थे और हमें न बहकाया

اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ

मगर मुजरिमों ने[98] तो अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं[99] और न कोई ग़म ख़्वार दोस्त[100] तो

اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ

किसी त़रह़ हमें फिर जाना होता[101] कि हम मुसल्मान होते बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में

ع ٥ ٣٦ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ

बहुत ईमान वाले न थे और बेशक तुम्हारा रब वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है नूह़ की

قَوْمُ نُوْحِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾

क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया[102] जब कि उन से उन के हमक़ौम नूह़ ने कहा क्या तुम डरते नहीं[103]

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ

बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का भेजा हुवा अमीन हूं[104] तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो[105] और मैं इस पर

عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ

तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है तो अल्लाह से डरो और

इलाही से बचा कर **96 :** या'नी बुत और उन के पुजारी सब औंधे कर के जहन्नम में डाल दिये जाएंगे। **97 :** या'नी उस के इत्तिबाअ़ करने वाले जिन्न हों या इन्सान। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इब्लीस के लश्करों से उस की जुर्रिय्यत मुराद है। **98 :** जिन्हों ने बुत परस्ती की दा'वत दी या वोह पहले लोग जिन का हम ने इत्तिबाअ़ किया या इब्लीस और उस की जुर्रिय्यत ने **99 :** जैसे कि मोमिनीन के लिये अम्बिया और औलिया और मलाएका और मोमिनीन शफ़ाअ़त करने वाले हैं। **100 :** जो काम आए। येह बात कुफ़्फ़ार उस वक़्त कहेंगे जब देखेंगे कि अम्बिया और औलिया और मलाएका और सालिह़ीन ईमानदारों की शफ़ाअ़त कर रहे हैं और उन की दोस्तियां काम आ रही हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि जन्नती कहेगा : मेरे फ़ुलां दोस्त का क्या ह़ाल है और वोह दोस्त गुनाहों की वज्ह से जहन्नम में होगा, अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि इस के दोस्त को निकालो और जन्नत में दाख़िल करो। तो जो लोग जहन्नम में बाक़ी रह जाएंगे वोह येह कहेंगे कि हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं है और न कोई ग़म ख़्वार दोस्त। ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ईमानदार दोस्त बढ़ाओ क्यूं कि वोह रोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त करेंगे। **101 :** दुन्या में **102 :** या'नी नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब तमाम पैग़म्बरों की तक्ज़ीब है क्यूं कि दीन तमाम रसूलों का एक है और हर एक नबी लोगों को तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देते हैं। **103 :** अल्लाह तआ़ला से, कुफ़्रो मआ़सी तर्क करो। **104 :** उस की वह़्य व रिसालत की तब्लीग़ पर। और आप की अमानत आप की क़ौम को मुसल्लम थी जैसे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अमानत पर अ़रब को इत्तिफ़ाक़ था। **105 :** जो मैं तौह़ीद व ईमान व त़ाअ़ते इलाही के मुतअ़ल्लिक़ देता हूं।

www.dawateislami.net

أَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾ قَالُوٓا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا

मेरा हुक्म मानो बोले क्या हम तुम पर ईमान ले आएं और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं[106] फ़रमाया मुझे

عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

क्या ख़बर उन के काम क्या हैं[107] उन का हिसाब तो मेरे रब ही पर है[108] अगर तुम्हें हिस (शुऊर) हो[109]

وَمَآ أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا لَئِن

और मैं मुसल्मानों को दूर करने वाला नहीं[110] मैं तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला[111] बोले ऐ नूह

لَّمْ تَنتَهِ يَٰنُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي

अगर तुम बाज़ न आए[112] तो ज़रूर संगसार किये जाओगे[113] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी क़ौम

كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِي وَمَن مَّعِيَ مِنَ النصف

ने मुझे झुटलाया[114] तो मुझ में और उन में पूरा फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे साथ वाले मुसल्मानों को

الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ فَأَنجَيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا

नजात दे[115] तो हम ने बचा लिया उसे और उस के साथ वालों को भरी हुई किश्ती में[116] फिर इस के बा'द[117]

بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

हम ने बाक़ियों को डुबो दिया बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में अक्सर मुसलमान न थे

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ ع ٨/١

और बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है आद ने रसूलों को झुटलाया[118] जब कि

106 : येह बात उन्हों ने गु़रूर से कही, गु़रबा के पास बैठना उन्हें गवारा न था, इस में वोह अपनी कस्रे शान (बे इ़ज़्ज़ती) समझते थे, इस लिये ईमान जैसी ने'मत से महरूम रहे। कमीने से मुराद उन की गु़रबा और पेशावर लोग थे और उन को रज़ील और कमीन कहना येह कुफ़्फ़ार का मुतकब्बिराना फे़'ल था, वरना दर ह़क़ीक़त सन्अ़त और पेशा हैसिय्यते दीन से आदमी को ज़लील नहीं करता। ग़ना अस्ल में दीनी ग़ना है और नसब तक़्वा का नसब। **मस्अला :** मोमिन को रज़ील कहना जाइज़ नहीं ख़्वाह वोह कितना ही मोहताज व नादार हो या वोह किसी नसब का हो। (مدارک) **107 :** वोह क्या पेशे करते हैं मुझे इस से क्या मतलब, मैं उन्हें **अल्लाह** की त़रफ़ दा'वत देता हूं। **108 :** वोही उन्हें जज़ा देगा। **109 :** तो न तुम उन्हें ऐब लगाओ न पेशों के बाइ़स उन से आ़र करो। फिर क़ौम ने कहा कि आप कमीनों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हम आप के पास आएं और आप की बात मानें, इस के जवाब में फ़रमाया **110 :** येह मेरी शान नहीं कि मैं तुम्हारी ऐसी ख़्वाहिशों को पूरा करूं और तुम्हारे ईमान के लालच में मुसल्मानों को अपने पास से निकाल दूं। **111 :** बुरहाने सह़ीह़ के साथ जिस से ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ हो जाए तो जो ईमान लाए वोही मेरा मुक़र्रब है और जो ईमान न लाए वोही दूर। **112 :** दा'वत व इन्ज़ार से **113 :** ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में **114 :** तेरी वह्य व रिसालत में, मुराद आप की येह थी कि मैं जो उन के ह़क़ में बद दुआ़ करता हूं उस का सबब येह नहीं कि उन्हों ने मुझे संगसार करने की धम्की दी, न येह कि उन्हों ने मेरे मुत्तबिईन को रज़ील कहा, बल्कि मेरी दुआ़ का सबब येह है कि उन्हों ने तेरे कलाम को झुटलाया और तेरी रिसालत को क़बूल करने से इन्कार किया **115 :** उन लोगों की शामते आ'माल से **116 :** जो आदमियों, परिन्दों और हैवानों से भरी हुई थी। **117 :** या'नी ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथियों को नजात देने के बा'द **118 :** आद एक

قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿۱۲۵﴾

उन से उन के हमक़ौम हूद ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿۱۲۶﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ

तो अल्लाह से डरो[119] और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से इस पर कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۷﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَتَتَّخِذُوْنَ

उसी पर है जो सारे जहान का रब क्या हर बुलन्दी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को[120] और मज़बूत महल

مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِیْنَ ﴿۱۳۰﴾ فَاتَّقُوا

चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे[121] और जब किसी पर गिरिफ़्त हो तो बड़ी बे दर्दी से गिरिफ़्त करते हो[122] तो अल्लाह से

اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿۱۳۱﴾ وَاتَّقُوا الَّذِیْۤ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمَدَّكُمْ

डरो और मेरा हुक्म मानो और उस से डरो जिस ने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से कि तुम्हें मा'लूम हैं[123] तुम्हारी मदद की

بِاَنْعَامٍ وَّبَنِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَجَنّٰتٍ وَّعُیُوْنٍ ﴿۱۳۴﴾ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ

चौपायों और बेटों और बाग़ों और चश्मों से बेशक मुझे तुम पर डर है

یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳۵﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِیْنَ ﴿۱۳۶﴾

एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का[124] बोले हमें बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नासिहों में न हो[125]

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِیْنَ ﴿۱۳۸﴾ فَكَذَّبُوْهُ

येह तो नहीं मगर वोही अगलों की रीत (रस्मो रवाज)[126] और हमें अ़ज़ाब होना नहीं[127] तो उन्हों ने उसे झुटलाया[128]

فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ وَ

तो हम ने उन्हें हलाक किया[129] बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान न थे और

क़बीला है और दर अस्ल येह एक शख़्स का नाम है जिस की औलाद से येह क़बीला है। **119 :** और मेरी तक्ज़ीब न करो **120 :** कि उस पर चढ़ कर गुज़रने वालों से तमस्ख़ुर करो और येह उस क़ौम का मा'मूल था, उन्हों ने सरे राह बुलन्द बिनाएं बना ली थीं वहां बैठ कर राह चलने वालों को परेशान करते और खेल करते। **121 :** और कभी न मरोगे **122 :** तलवार से क़त्ल कर के दुर्रे मार कर निहायत बे रह्मी से **123 :** या'नी वोह ने'मतें जिन्हें तुम जानते हो, आगे उन का बयान फ़रमाया जाता है। **124 :** अगर तुम मेरी ना फ़रमानी करो। इस का जवाब उन की त़रफ़ से येह हुवा कि **125 :** हम किसी त़रह़ तुम्हारी बात न मानेंगे और तुम्हारी दा'वत क़बूल न करेंगे। **126 :** या'नी जिन चीज़ों का आप ने ख़ौफ़ दिलाया येह पहलों का दस्तूर है वोह भी ऐसी ही बातें कहा करते थे। इस से उन की मुराद येह थी कि हम इन बातों का ए'तिबार नहीं करते, इन्हें झूट जानते हैं। या आयत के मा'ना येह हैं कि येह मौत व ह़यात और इ़मारतें बनाना पहलों का त़रीक़ा है। **127 :** दुन्या में न मरने के बा'द उठना न आख़िरत में ह़िसाब **128 :** या'नी हूद عَلَيْهِ السَّلَام को **129 :** हवा के अ़ज़ाब से।

www.dawateislami.net

إِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾ إِذْ

बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है समूद ने रसूलों को झुटलाया जब कि

قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

उन से उन के हमक़ौम सालेह़ ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का अमानत दार रसूल हूं

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ

तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से कुछ इस पर उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي

उसी पर है जो सारे जहान का रब है क्या तुम यहां की[130] ने'मतों में चैन से छोड़ दिये जाओगे[131]

جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُونَ مِنَ

बाग़ों और चश्मों और खेतों और खजूरों में जिन का शिगूफ़ा नर्म नाज़ुक और पहाड़ों

الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ

में से घर तराशते हो उस्तादी से[132] तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो और ह़द से बढ़ने वालों के कहने पर

الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوا

न चलो[133] वोह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[134] और बनाव नहीं करते[135] बोले

إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا ۚ فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ

तुम पर तो जादू हुवा है[136] तुम तो हमीं जैसे आदमी हो तो कोई निशानी लाओ[137] अगर

كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هَٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ

सच्चे हो[138] फ़रमाया येह नाक़ा है एक दिन इस के पीने की बारी[139] और एक मुअ़य्यन दिन

130 : या'नी दुन्या की **131 :** कि येह ने'मतें कभी ज़ाइल न हों और कभी अ़ज़ाब न आए कभी मौत न आए, आगे उन की ने'मतों का बयान है। **132 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि فَرِہ ब मा'ना फ़ख़्रो ग़ुरूर है। मा'ना येह हुए कि अपनी सन्अ़त पर ग़ुरूर करते इतराते। **133 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि "مسرفین" से मुराद मुश्रिकीन हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि "مسرفین" से मुराद वोह नव शख़्स हैं जिन्हों ने नाक़ा को क़त्ल किया था। **134 :** कुफ़्रो ज़ुल्म और मआ़सी के साथ **135 :** ईमान ला कर और अ़द्ल क़ाइम कर के और **अल्लाह** के मुत़ीअ़ हो कर। मा'ना येह हैं कि इन का फ़साद ठोस है जिस में किसी त़रह़ नेकी का शाएबा भी नहीं और बा'ज़ मुफ़्सिदीन ऐसे भी होते हैं कि कुछ फ़साद भी करते हैं कुछ नेकी भी उन में होती है मगर येह ऐसे नहीं। **136 :** या'नी बार बार ब कसरत जादू हुवा है जिस की वज्ह से अ़क़्ल बजा नहीं रही (مَعَاذَ اللّٰہ) **137 :** अपनी सच्चाई की **138 :** रिसालत के दा'वे में। **139 :** इस में इस से मुज़ाह़मत न करो, येह एक ऊंटनी थी जो उन के मो'जिज़ा त़लब करने पर उन के ह़स्बे ख़्वाहिशे ब दुआ़ए ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام पथ्थर से निकली थी, उस का सीना साठ गज़ का था, जब उस के पीने का दिन होता तो वोह वहां का तमाम पानी पी जाती और

مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

तुम्हारी बारी और इसे बुराई के साथ न छूओ[140] कि तुम्हें बड़े दिन का अ़ज़ाब आ लेगा[141]

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ

इस पर उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं[142] फिर सुब्ह को पचताते रह गए[143] तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ लिया[144] बेशक इस में ज़रूर निशानी है

ع ١٩/١٢ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾ ع

और उन में बहुत मुसल्मान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾ ۚۖ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا

लूत़ की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया जब कि उन से उन के हमक़ौम लूत़ ने फ़रमाया क्या

تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾ ۚ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾ ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾ ۚ وَ

तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और

مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾ ؕ

मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾ ۙ وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ

क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद फ़े'ली करते हो[145] और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने

مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ

जोरूएं (बीवियां) बनाईं बल्कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो[146] बोले ऐ लूत़ अगर तुम बाज़ न आए[147]

لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ ؕ رَبِّ

तो ज़रूर निकाल दिये जाओगे[148] फ़रमाया मैं तुम्हारे काम से बेज़ार हूं[149] ऐ मेरे रब

जब लोगों के पीने का दिन होता तो उस दिन न पीती। (मदारिक) **140 :** न इस को मारो न इस की कूंचें काटो। **141 :** नुज़ूले अ़ज़ाब की वज्ह से उस दिन को बड़ा फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि वोह अ़ज़ाब इस क़दर अ़ज़ीम और सख़्त था कि जिस दिन में वोह वाक़ेअ़ हुवा उस को उस की वज्ह से बड़ा फ़रमाया गया। **142 :** कूंचें काटने वाले शख़्स का नाम क़ुदार था और वोह लोग उस के इस फ़े'ल से राज़ी थे, इस लिये कूंचें काटने की निस्बत उन सब की त़रफ़ की गई। **143 :** कूंचें काटने पर नुज़ूले अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से, न कि मा'सियत पर ताइबाना नादिम हुए हों, या येह बात कि आसारे अ़ज़ाब देख कर नादिम हुए, ऐसे वक़्त की नदामत नाफ़ेअ़ नहीं। **144 :** जिस की उन्हें ख़बर दी गई थी तो हलाक हो गए। **145 :** इस के येह मा'ना भी हो सकते हैं कि क्या मख़्लूक़ में ऐसे क़बीह और ज़लील फ़े'ल के लिये तुम्हीं रह गए हो, जहां के और लोग भी तो हैं उन्हें देख कर तुम्हें शरमाना चाहिये। और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि ब कसरत औ़रतें होते हुए इस फ़े'ले क़बीह का मुरतकिब होना इन्तिहा दरजे की ख़बासत है। **146 :** कि ह़लाल त़य्यिब को छोड़ कर ह़राम ख़बीस में मुब्तला होते हो। **147 :** नसीह़त करने और इस फ़े'ल को बुरा कहने से **148 :** शह्र से और तुम्हें यहां न रहने दिया जाएगा। **149 :** और मुझे इस से निहायत दुश्मनी है, फिर आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की।

www.dawateislami.net

نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا

मुझे और मेरे घर वालों को इन के काम से बचा[150] तो हम ने उसे और उस के सब घर वालों को नजात बख़्शी[151] मगर एक बुढ़िया

فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ

कि पीछे रह गई[152] फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया[153] तो क्या ही बुरा

مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

बरसाव था डराए गयों का बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ ع ٩ ١٦ ١٣

न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है बन (जंगल)

لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّيْ لَكُمْ

वालों ने रसूलों को झुटलाया[154] जब उन से शुऐब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये

رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ

अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं इस पर कुछ तुम से उजरत

اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا

नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है[155] नाप पूरा करो और घटाने

مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

वालों में न हो[156] और सीधी तराज़ू से तोलो और लोगों की चीज़ें कम कर के

اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो[157] और उस से डरो जिस ने तुम को पैदा किया

150 : इस की शामते आ'माल से महफ़ूज़ रख। **151 :** या'नी आप की बेटियों को और उन तमाम लोगों को जो आप पर ईमान लाए। **152 :** जो आप की बीबी थी और वोह अपनी क़ौम के फ़े'ल पर राज़ी थी और जो मा'सियत पर राज़ी हो वोह आ़सी के हुक्म में होता है, इसी लिये वोह बुढ़िया गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब हुई और उस ने नजात न पाई। **153 :** पथ्थरों का या गन्धक और आग का **154 :** येह बन (जंगल) मद्यन के क़रीब था, इस में बहुत से दरख़्त और झाड़ियां थीं अल्लाह तआ़ला ने हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को उन की तरफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया था जैसा कि अहले मद्यन की तरफ़ मब्ऊ़स किया था और येह लोग हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के न थे। **155 :** उन तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की दा'वत का येही उ़न्वान रहा क्यूं कि वोह सब हज़रात अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ और उस की इ़ताअ़त और इख़्लास फ़िल इ़बादत का हुक्म देते और तब्लीग़े रिसालत पर कोई अज्र नहीं लेते थे। लिहाज़ा सब ने येही फ़रमाया। **156 :** लोगों के हुक़ूक़ कम न करो नाप और तोल में **157 :** रह्ज़नी और लूटमार कर के और खेतियां तबाह कर के, येही उन लोगों की आ़दतें थीं। हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें इन से मन्अ़ फ़रमाया।

www.dawateislami.net

وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ اَنْتَ

और अगली मख़्लूक़ को बोले तुम पर जादू हुवा है तुम तो नहीं

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا

मगर हम जैसे आदमी[158] और बेशक हम तुम्हें झूटा समझते हैं तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा

مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾

गिरा दो अगर तुम सच्चे हो[159] फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) हैं[160]

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ लिया बेशक वोह बड़े दिन का अ़ज़ाब था[161]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ

बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٩١﴾ ع وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٢﴾ ؕ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ ع ١٠ ١٦ ١٤

इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है और बेशक येह क़ुरआन रब्बुल आ़लमीन का उतारा हुवा है इसे रूहुल अमीन ले

الْاَمِيْنُ ﴿١٩٣﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

कर उतरा[162] तुम्हारे दिल पर[163] कि तुम डर सुनाओ रोशन अ़रबी

مُّبِيْنٍ ؕ ﴿١٩٥﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ

ज़बान में और बेशक इस का चरचा अगली किताबों में है[164] और क्या येह उन के लिये निशानी न थी[165] कि उस

158 : नुबुव्वत का इन्कार करने वाले अम्बिया की निस्बत बिल उ़मूम येही कहा करते थे। जैसा कि आज कल के बा'ज़े फ़ासिदुल अ़क़ीदा कहते हैं। 159 : नुबुव्वत के दा'वे में। 160 : और जिस अ़ज़ाब के तुम मुस्तहिक़ हो, वोह जो अ़ज़ाब चाहेगा तुम पर नाज़िल फ़रमाएगा। 161 : जो कि इस त़रह़ हुवा कि उन्हें शदीद गरमी पहुंची, हवा बन्द हुई और सात रोज़ गरमी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार रहे, तहख़ानों में जाते वहां और ज़ियादा गरमी पाते। इस के बा'द एक अब्र आया सब उस के नीचे आ के जम्अ़ हो गए, उस से आग बरसी और सब जल गए। (इस वाक़िए़ का बयान सूरए आ'राफ़ और सूरए हूद में गुज़र चुका है)। 162 : रूहुल अमीन से ह़ज़रते जिब्रील मुराद हैं जो वह्य के अमीन हैं। 163 : ताकि आप उसे मह़फ़ूज़ रखें और समझें और न भूलें। दिल की तख़्सीस इस लिये है कि दर ह़क़ीक़त वोही मुख़ात़ब है और तमीज़ व अ़क़्ल व इख़्तियार का मक़ाम भी वोही है, तमाम आ'ज़ा उस के मुसख़्ख़र व मुती़अ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि दिल के दुरुस्त होने से तमाम बदन दुरुस्त हो जाता है और इस के ख़राब होने से सब जिस्म ख़राब। और फ़रह़ व सुरूर व रन्जो ग़म का मक़ाम दिल ही है, जब दिल को ख़ुशी होती है तमाम आ'ज़ा पर इस का असर पड़ता है, तो वोह मिस्ल रईस के है, वोही मौज़अ़ है अ़क़्ल का, तो अमीरे मुत़्लक़ हुवा और तक्लीफ़ जो अ़क़्ल व फ़ह्म के साथ मश्रूत़ है इसी की त़रफ़ राजे़अ़ हुई। 164 : "اِنَّهٗ" की ज़मीर का मरजअ़ अगर क़ुरआन हो तो इस के मा'ना येह होंगे कि इस का ज़िक्र तमाम कुतुबे समाविया में है और अगर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ ज़मीर राजेअ़ हो तो मा'ना येह होंगे कि अगली किताबों में आप की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है। 165 : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिद्क़े नुबुव्वत व रिसालत पर।

www.dawateislami.net

يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾

नबी को जानते हैं बनी इसराईल के आ़लिम[166] और अगर हम उसे किसी ग़ैर अ़रबी शख़्स पर उतारते

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ

कि वोह उन्हें पढ़ सुनाता जब भी उस पर ईमान न लाते[167] हम ने यूंही झुटलाना पैरा दिया (पैवस्त कर दिया) है मुजरिमों के

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَاْتِيَهُمْ

दिलों में[168] वोह इस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि देखें दर्दनाक अ़ज़ाब तो वोह अचानक उन पर

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ اَفَبِعَذَابِنَا

आ जाएगा और उन्हें ख़बर न होगी तो कहेंगे क्या हमें कुछ मोहलत मिलेगी[169] तो क्या हमारे अ़ज़ाब की

يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا

जल्दी करते हैं भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरत्ने दें[170] फिर आए उन पर वोह जिस का वोह वा'दा

يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٧﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ

दिये जाते हैं[171] तो क्या काम आएगा उन के वोह जो बरत्ते थे[172] और हम ने कोई बस्ती हलाक

قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا مع

न की जिसे डर सुनाने वाले न हों नसीह़त के लिये और हम ज़ुल्म नहीं करते[173] और इस

166 : अपनी किताबों से, और लोगों को ख़बरें देते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने यहूदे मदीना के पास अपने मो'तमिदीन को येह दरयाफ़्त करने भेजा कि क्या नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान सय्यिदे काएनात मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत उन की किताबों में कोई ख़बर है ? इस का जवाब उ़लमाए यहूद ने येह दिया कि येही उन का ज़माना है और उन की ना'त व सिफ़त तौरैत में मौजूद है। उ़लमाए यहूद में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने सलाम और इब्ने यामीन और सा'लबा और असद और उसैद येह ह़ज़रात जिन्हों ने तौरैत में हुज़ूर के औसाफ़ पढ़े थे हुज़ूर पर ईमान लाए। **167 :** मा'ना येह हैं कि हम ने येह क़ुरआने करीम एक फ़सीह़ बलीग़ अ़रबी नबी पर उतारा जिस की फ़साह़त अहले अ़रब को मुसल्लम है और वोह जानते हैं कि क़ुरआने करीम मो'जिज़ है और इस की मिस्ल एक सूरत बनाने से भी तमाम दुन्या आ़जिज़ है, इलावा बरीं उ़लमाए अहले किताब का इत्तिफ़ाक़ है कि इस के नुज़ूल से क़ब्ल इस के नाज़िल होने की बिशारत और इस नबी की सिफ़त उन की किताबों में उन्हें मिल चुकी है, इस से क़त्ई़ त़ौर पर साबित होता है कि येह "नबी" **अल्लाह** के भेजे हुए हैं और येह किताब उस की नाज़िल फ़रमाई हुई है, और कुफ़्फ़ार जो त़रह़ त़रह़ की बेहूदा बातें इस किताब के मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं सब बातिल हैं और ख़ुद कुफ़्फ़ार भी मुतह़य्यिर (हैरान) हैं कि इस के ख़िलाफ़ क्या बात कहें। इस लिये कभी इस को पहलों की दास्तानें कहते हैं, कभी शे'र कभी सेह्र और कभी येह कि مَعَاذَاللّٰہ इस को ख़ुद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बना लिया है और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ इस की ग़लत़ निस्बत कर दी है। इस त़रह़ के बेहूदा ए'तिराज़ मुआ़निद (ह़ासिद) हर ह़ाल में कर सकता है, ह़त्ता कि अगर बिलफ़र्ज़ येह क़ुरआन किसी ग़ैर अ़रबी शख़्स पर नाज़िल किया जाता जो अ़रबी की महारत न रखता और बा वुजूद इस के वोह ऐसा मो'जिज़ क़ुरआन पढ़ कर सुनाता, जब भी येह लोग इसी त़रह़ कुफ़्र करते जिस त़रह़ उन्हों ने अब कुफ़्र व इन्कार किया क्यूं कि उन के कुफ़्र व इन्कार का बाइ़स इ़नाद है। **168 :** या'नी उन काफ़िरों के जिन का कुफ़्र इख़्तियार करना और इस पर मुसिर रहना हमारे इ़ल्म में है, तो उन के लिये हिदायत का कोई भी त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए किसी ह़ाल में वोह कुफ़्र से पलटने वाले नहीं। **169 :** ताकि हम ईमान लाएं और तस्दीक़ करें। लेकिन उस वक़्त मोहलत न मिलेगी। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार को उस अ़ज़ाब की ख़बर दी तो बराहे तमस्ख़ुर व इस्तिह़ज़ा कहने लगे कि येह अ़ज़ाब कब आएगा ? इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : **170 :** और फ़ौरन हलाक न कर दें **171 :** या'नी अ़ज़ाबे इलाही **172 :** या'नी दुन्या की ज़िन्दगानी और इस का ऐ़श ख़्वाह त़वील भी हो लेकिन न वोह अ़ज़ाब को दफ़्अ़ कर सकेगा न उस की शिद्दत कम कर सकेगा। **173 :** पहले

www.dawateislami.net

تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾ اِنَّهُمْ عَنِ

कुरआन को ले कर शैतान न उतरे[174] और वोह इस क़ाबिल नहीं[175] और न वोह ऐसा कर सकते हैं[176] वोह तो

السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ

सुनने की जगह से दूर कर दिये गए हैं[177] तो तू अल्लाह के सिवा दूसरा खुदा न पूज कि तुझ पर

الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ

अज़ाब होगा और ऐ महबूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ[178] और अपनी रहमत का बाज़ू बिछाओ[179]

لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢١٥﴾ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

अपने पैरव (ताबेअ़) मुसल्मानों के लिये[180] तो अगर वोह तुम्हारा हुक्म न मानें तो फ़रमा दो मैं तुम्हारे कामों से

تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ

बे अ़लाक़ा (ला तअ़ल्लुक़) हूं और उस पर भरोसा करो जो इ़ज़्ज़त वाला मेहर वाला है[181] जो तुम्हें देखता है जब

تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ

तुम खड़े होते हो[182] और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को[183] बेशक वोही सुनता जानता है[184] क्या

اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾

मैं तुम्हें बता दूं कि किस पर उतरते हैं शैतान उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनाहगार पर[185]

हुज्जत क़ाइम कर देते हैं, डर सुनाने वालों को भेज देते हैं। इस के बा'द भी जो लोग राह पर नहीं आते और हक़ को क़बूल नहीं करते उन पर अ़ज़ाब करते हैं। **174 :** इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो कहते थे कि जिस त़रह़ शयात़ीन काहिनों के पास आस्मानी ख़बरें लाते हैं इसी त़रह़ مَعَاذَاللّٰه ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास क़ुरआन लाते हैं। इस आयत में उन के इस ख़याल को बात़िल कर दिया कि येह ग़लत़ है। **175 :** कि क़ुरआन लाएं **176 :** क्यूं कि येह उन के मक़्दूर (बस) से बाहर है। **177 :** या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की त़रफ़ जो वह्य होती है उस को अल्लाह त आ़ला ने मह़फ़ूज़ कर दिया, जब तक कि फ़िरिश्ता उस को बारगाहे रिसालत में पहुंचाए इस से पहले शयात़ीन उस को नहीं सुन सकते। इस के बा'द अल्लाह त आ़ला अपने बन्दों से फ़रमाता है : **178 :** हुज़ूर के क़रीब के रिश्तेदार बनी हाशिम और बनी मुत्त़लिब हैं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें ए'लान के साथ इन्ज़ार फ़रमाया और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया जैसा कि अह़ादीसे सह़ीह़ा में वारिद है। **179 :** या'नी लुत़्फ़ो करम फ़रमाओ। **180 :** जो सिद्क़ो इख़्लास से आप पर ईमान लाएं ख़्वाह वोह आप से क़राबत रखते हों या न रखते हों। **181 :** या'नी अल्लाह त आ़ला, तुम अपने तमाम काम उस को तफ़्वीज़ करो (या'नी अल्लाह त आ़ला को सोंप दो)। **182 :** नमाज़ के लिये या दुआ़ के लिये या हर उस मक़ाम पर जहां तुम हो। **183 :** जब तुम अपने तहज्जुद पढ़ने वाले अस्ह़ाब के अह़वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाने के लिये शब को दौरा करते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब तुम इमाम हो कर नमाज़ पढ़ाते हो और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद व क़ुऊ़द में गुज़रते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि वोह आप की गर्दिशे चश्म को देखता है नमाज़ों में, क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पसो पेश (आगे, पीछे) यक्सां मुलाह़ज़ा फ़रमाते थे। और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ह़दीस में है बख़ुदा मुझ पर तुम्हारा ख़ुशूअ़ व रुकूअ़ मख़्फ़ी नहीं, मैं तुम्हें अपने पसे पुश्त देखता हूं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में साजिदीन से मोमिनीन मुराद हैं और मा'ना येह हैं कि ज़मानए ह़ज़रते आदम व ह़व्वा عَلَيْهِمَا السَّلَام से ले कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह व आमिना ख़ातून तक मोमिनीन की अस्लाब व अरह़ाम में आप के दौरे को मुलाह़ज़ा फ़रमाता है। इस से साबित हुवा कि आप के तमाम उसूल आबाओ अज्दाद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तक सब के सब मोमिन हैं। (مدارک وجمل وغیرہ) **184 :** तुम्हारे क़ौल व अ़मल और तुम्हारी निय्यत को।

www.dawateislami.net

يُلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾ؕ وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾ؕ

शैत़ान अपनी सुनी हुई[186] उन पर डालते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं[187] और शाइ़रों की पैरवी गुमराह करते हैं[188]

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ۙ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾ۙ

क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सरगर्दां फिरते हैं[189] और वोह कहते हैं जो नहीं करते[190]

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ

मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[191] और ब कसरत **अल्लाह** की याद की[192] और बदला लिया[193] बा'द

بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾ ع ١١ ٣٦ ١٥

इस के कि उन पर ज़ुल्म हुवा[194] और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम[195] कि किस करवट पर पलटा खाएंगे[196]

اٰياتها ٩٣ ﴿٢٧﴾ سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ ﴿٤٨﴾ ركوعاتها ٧

सूरए नम्ल मक्किय्या है, इस में तिरानवे आयतें और सात रुकूअ़ हैं

इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला उन मुश्रिकों के जवाब में जो कहते थे कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर शैत़ान उतरते हैं, येह इर्शाद फ़रमाता है : **185 :** मिस्ल मुसैलमा वग़ैरा काहिनों के। **186 :** जो उन्हों ने मलाएका से सुनी होती है। **187 :** क्यूं कि वोह फ़िरिश्तों से सुनी हुई बातों में अपनी त़रफ़ से बहुत झूट मिला देते हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि एक बात सुनते हैं तो सो झूट उस के साथ मिलाते हैं और येह भी उस वक़्त तक था जब तक कि वोह आस्मान पर पहुंचने से रोके न गए थे। **188 :** उन के अश्आ़र में कि उन को पढ़ते हैं रवाज देते हैं बा वुजूदे कि वोह अश्आ़र किज़्ब व बात़िल होते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत शुअ़राए कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हज्व में शे'र कहते थे और कहते थे कि जैसा मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कहते हैं ऐसा हम भी कह लेते हैं और उन की क़ौम के गुमराह लोग उन से उन अश्आ़र को नक़्ल करते थे, उन लोगों की आयत में मज़म्मत फ़रमाई गई। **189 :** और हर त़रह़ की झूटी बातें बनाते हैं और हर लग़्व व बात़िल में सुख़न आराई करते हैं, झूटी मद्ह़ करते हैं, झूटी हज्व करते हैं। **190 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि शे'र से पुर हो। मुसल्मान शुअ़रा जो इस त़रीक़े से इज्तिनाब करते हैं इस हुक्म से मुस्तस्ना किये गए। **191 :** इस में शुअ़राए इस्लाम का इस्तिस्ना फ़रमाया गया, वोह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त लिखते हैं, **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द लिखते हैं, इस्लाम की मद्ह़ लिखते हैं, पन्दो नसाएह़ लिखते हैं, इस पर अज्रो सवाब पाते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है कि मस्जिदे नबवी में ह़ज़रते ह़स्सान के लिये मिम्बर बिछाया जाता था, वोह उस पर खड़े हो कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुफ़ाख़र पढ़ते (फ़ज़ाइल बयान फ़रमाते) थे और कुफ़्फ़ार की बद गोइयों का जवाब देते थे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाते थे। बुख़ारी की ह़दीस में है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बा'ज़ शे'र ह़िक्मत होते हैं। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस मुबारक में अक्सर शे'र पढ़े जाते थे जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समुरह से मरवी है। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया कि शे'र कलाम है बा'ज़ अच्छा होता है बा'ज़ बुरा, अच्छे को लो बुरे को छोड़ दो। शअ़्बी ने कहा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ शे'र कहते थे। ह़ज़रते अ़ली उन सब से ज़ियादा शे'र फ़रमाने वाले थे। رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم। **192 :** और शे'र उन के लिये ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का सबब न हो सका, बल्कि उन लोगों ने जब शे'र कहा भी तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना और उस की तौह़ीद और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त और अस्ह़ाबे किराम व सुलह़ाए उम्मत की मद्ह़ और ह़िक्मत व मौइज़त और ज़ोहदो अदब में। **193 :** कुफ़्फ़ार से उन की हज्व का **194 :** कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से कि उन्हों ने मुसल्मानों की और उन के पेश्वाओं की हज्व की। उन ह़ज़रात ने उस को दफ़्अ़ किया और उस के जवाब दिये, येह मज़मूम नहीं हैं बल्कि मुस्तह़िक़्क़े अज्रो सवाब हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि मोमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, येह उन ह़ज़रात का जिहाद है। **195 :** या'नी मुश्रिकीन जिन्हों ने सय्यिदुत्त़ाहिरीन अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हज्व की। **196 :** मौत के बा'द। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया जहन्नम की त़रफ़ और वोह बुरा ही ठिकाना है।

www.dawateislami.net